'जनचेतना' पुस्तक प्रदर्शनी वाहन पर ए.बी.वी.पी. के गुण्डों का हमला

वाहन पर मौजूद कार्यकर्त्ताओं से मारपीट की और वाहन के शीशे तोड़े

छात्रों-नौजवानों के विरोध ने फ़ासीवादी गुण्डों को खदेड़ा

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के क़रीब 25 गुण्डों ने 20 जनवरी को दिल्ली विश्वविद्यालय के कला संकाय के भीतर विश्वविद्यालय प्रशासन की अनुमति से खड़े 'जनचेतना' पुस्तक प्रदर्शनी वाहन पर हमला किया। उन्होंने वाहन के शीशे तोड़ डाले और वहाँ मौजूद तीन कार्यकर्त्ताओं कुणाल, संजय और नवीन के साथ मारपीट की। ज्ञात हो कि 'जनचेतना' एक सांस्कृतिक मुहिम है जो पिछले 24 वर्षों से पूरे देश में प्रेमचन्द, शरतचन्द्र, गोर्की, तोलस्तोय, हेमिंग्वे, राहुल सांकृत्यायन, राधामोहन गोकुलजी आदि जैसे लेखकों, चिन्तकों और साहित्यकारों के साहित्य व लेखन के जरिये समाज में प्रगतिशील विचारों के प्रचार-प्रसार में लगा हुआ है। 'जनचेतना' के पुस्तक प्रदर्शनी वाहन पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की इस गुण्डावाहिनी ए.बी.वी.पी. का पहला हमला नहीं है। इसके पहले भी जनवाद और समानता के विचारों के प्रचार-प्रसार में लगी इस सांस्कृतिक मुहिम पर संघी गुण्डे हमला कर चुके हैं। इसके पहले मथुरा में भी ए.बी.वी.पी. के गुण्डों ने 'जनचेतना' के पुस्तक प्रदर्शनी वाहन पर हमला किया था। पिछले वर्ष दिल्ली विश्वविद्यालय में भी ए.बी.वी.पी. के गुण्डों ने प्रदर्शनी वाहन पर हमला किया था लेकिन दिशा छात्र संगठन के कार्यकर्त्ताओं ने उन्हें पीटकर वहाँ से खदेड़ दिया था।

इस बार किये गये हमले के दौरान ए.बी.वी.पी. के गुण्डे हॉकी, डण्डों आदि से लैस थे। उनका मकसद वाहन को नुक़सान पहुँचाना था और वे खुले तौर पर बोल भी रहे थे कि इन विचारों का प्रचार-प्रसार विश्वविद्यालय परिसर में नहीं करने दिया जाएगा। 'जनचेतना' के कार्यकर्त्ताओं ने इस पर प्रतिरोध किया तो उनके साथ मारपीट शुरू कर दी गई और वाहन के शीशे तोड़ दिये गये। जब तक यह सूचना 'जनचेतना' के स्वयंसेवकों और अन्य शुभचिन्तकों तक पहुँच पाती तब तक वे वाहन को काफ़ी क्षति पहुँचा चुके थे। इस घटना के बाद दिशा छात्र संगठन, आइसा व एस.एफ.आई. के छात्र 'जनचेतना' के समर्थन में घटनास्थल पर पहुँचे और अपनी एकजुटता जताई। इस हमले के विरोध में दिल्ली विश्वविद्यालय के पूरे जनवादी और प्रगतिशील समुदाय ने अगले दिन कला संकाय के भीतर ही एक विरोध सभा की और जुलूस निकालकर विद्यार्थी परिषद के फ़ासीवादी गुण्डों को चुनौती दी। विरोध सभा को उर्दू विभाग के शिक्षक व प्रगतिशील लेखक संघ के अली जावेद, डेमोक्रेटिक टीचर्स फ़्रण्ट के राजीव, व अन्य शिक्षकों समेत कई कार्यकर्त्ताओं ने सम्बोधित किया।

इस मामले की शिकायत 'जनचेतना' के कार्यकर्त्ताओं ने प्रॉक्टर ऑफ़िस में की और साथ ही मॉरिस नगर थाने में भी शिकायत दर्ज कराई। 'जनचेतना' के संजय ने कहा कि अगर ए.बी.वी.पी. के गुण्डे यह समझते हैं कि इस प्रकार की कार्रवाइयों से वे हमें आतंकित करके यहां से हटा सकते हैं तो यह उनकी बहुत बड़ी भूल है। 'जनचेतना' पुस्तक प्रदर्शनी वाहन कला संकाय में लगा रहेगा और इस क़िस्म के किसी भी हमले का मुँहतोड़ जवाब दिया जाएगा। अनुमति के बाद वाहन की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी विश्वविद्यालय प्रशासन की और पुलिस प्रशासन की बनती है। अगर वह इस काम को नहीं करते हैं तो इस काम को 'जनचेतना' के स्वयंसेवक और समर्थक स्वयं करने को बाध्य होंगे।

उसी दिन विद्यार्थी परिषद के गुण्डे एक बार फिर वाहन के पास आए लेकिन उस समय दिशा छात्र संगठन व अन्य प्रगतिशील छात्र संगठनों के छात्र वाहन की सुरक्षा के लिए वहाँ मौजूद थे और जवाब मिलने के भय से गुण्डे केवल फ़ासीवादी नारेबाज़ी करते रहे। वाहन के पास फटकने की उनकी हिम्मत नहीं हुई। लेकिन वे अपनी राजनीतिक पहुँच से विश्वविद्यालय प्रशासन पर लगातार यह दबाव बना रहे थे कि वाहन वहाँ से हट जाए। अन्त में प्रशासन इस दबाव के आगे झुक गया और वाहन को वहाँ से हटा दिया गया। लेकिन अगले दिन छात्र और शिक्षक बड़ी संख्या में एकजुट होकर प्रॉक्टर गुरमीत सिंह से मिले और विरोध दर्ज कराया। इसके बाद फिर से वाहन दिल्ली विश्वविद्यालय के कला संकाय के भीतर लगाया गया। दिशा छात्र संगठन के वालण्टियर किसी भी हमले से निपटने की तैयारी के साथ वहाँ मौजूद थे। नतीजतन, विद्यार्थी परिषद के गुण्डों की हिम्मत नहीं हुई कि वाहन के पास भी फटकें। ज्ञात हो कि पिछले वर्ष जब जनचेतना वाहन पर परिषद के गुण्डों ने हमला किया था तो दिशा छात्र संगठन के कार्यकर्त्ताओं ने उनकी पिटाई कर दी थी।

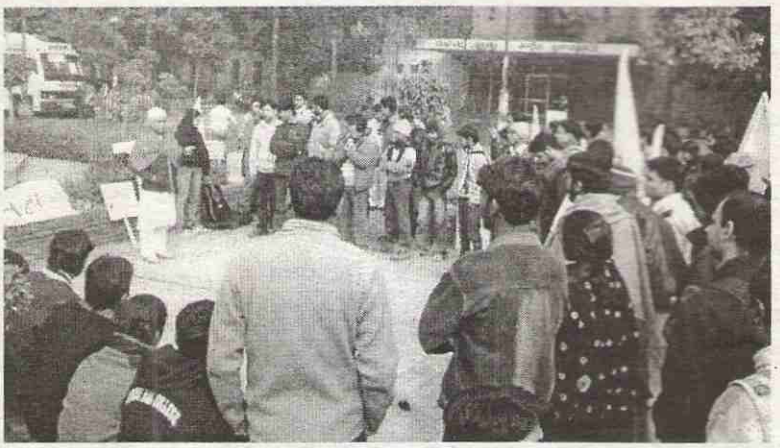

जनचेतना पर हमले के विरोध में दि.वि.वि. में जारी सभा, पृष्ठभूमि में जनचेतना प्रदर्शनी वाहन